छत्तीसगढ़ में ट्रांसजेंडर सांस्कृतिक कार्यक्रम

चर्चा में क्यों?

हाल ही में **रायपुर के महंत घासीदास संग्रहालय के मुक्ता काशी मंच पर राज्य स्तरीय ट्रांसजेंडर सांस्कृतिक कार्यक्रम** का आयोजन किया गया।

यह आयोजन **दहेज़ जैसी सामाजिक बुराई के खिलाफ एक सक्रिय पहल थी**, जो आज भी देश के विभिन्न हिस्सों में विशेषकर अविकसित राज्यों में प्रचलित है।

मुख्य बिंदु:

- यह कार्यक्रम **संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग तथा छत्तीसगढ़ मितवा संकल्प समिति द्वारा** संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था।
- इंद्रधनुषी और छत्तीसगढ़ी थीम पर रैंप पर थिरकते ट्रांस-मॉडल्स के साथ-साथ ट्रांसजेंडर कलाकारों ने राजस्थानी, कथक, ओडिसी तथा लावणी का मिश्रण नृत्य भी प्रस्तुत किया।
- वरिष्ठ समुदाय के सदस्यों ने **सभी कलाकारों को नारियल, शॉल और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।**

ट्रांसजेंडर

- ट्रांसजेंडर व्यक्ति अधिनियम, 2019 के अनुसार, ट्रांसजेंडर को ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है जिसकी लिंग पहचान उसके जैविक लिंग से मेल नहीं खाती।
- इसमें **अंतर-लिंगीय भिन्नता वाले ट्रांस-व्यक्ति, लिंग-विषम लैंगिक और किन्नर, हिजड़ा, अरावनी तथा जोगता जैसी सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान वाले लोग** शामिल हैं।
- भारत की 2011 की जनगणना देश की 'ट्रांस' आबादी की संख्या को शामिल करने वाली **पहली जनगणना** थी। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि **4.8 मिलियन भारतीय ट्रांसजेंडर के रूप में पहचाने** जाते हैं।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/transgender-cultural-event-in-chhattisgarh